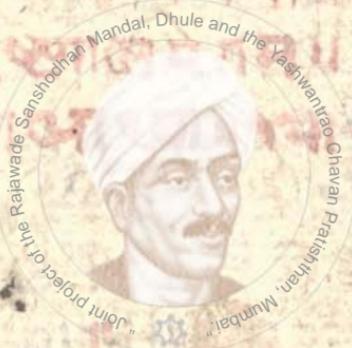


३० गणेश प्रसाद



"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavhan Publisher, Mumbai"

११ प्रतीटा हो फोड़ी गुरु नामे ॥१॥ ने सख को कीवा होते
श्रौत्ये ॥ वसत रहत हे रवोन तीकर नीवी सर्जन मधुर
लवन गर्जनी ॥२॥ भक्ति सरोवर नीर्मल पाणी वीका से
भ्यान घबीघ कमलणी महल सुझात तीये सज्जानी नीम
जनी नीम्बू ॥३॥ ते सरोवर तीने सेवीना पाणी जीव सीव
चक्रवाक्य दीक्षी सद्गुर चीजानु वसंत वनी देरवोनी
मनी भीलणी भीलण्डे ॥४॥ सत्रु लक्ष्मा सत्रु वर नुले
नीचागच्छा स्थान दथा राजा रव्या क्लेहु नीथा थाथ
गथार वीगु तल्या ॥५॥ बाथ महल धानी लस्कू कत
तेण वण स्पनी मधु सधा ता नोक्ष भागा कपोरवी कत ॥

गोसायेनमा ॥५३॥ श्रीदक्षिणायेराम ॥५४॥ अ
मो सदुरवं संनु ॥ ज्येरक्षयेन काहै तुम्हारनु ॥ ते तुरका
छीचा मारनु भानव नानु जेरीदो ॥ ॥ ते आदी द्वयची
जुनी पानग को नीजा नीत तदण नवपक्षदी वीर जभा
ते वीरद्वापन आरक्ष ॥ ॥ ३४ ॥ यानवेरा ॥ याची हाव रका
केरजाकु बुझतर्द पासी ॥ ते बहून वृपक्षदे आनीलव
लव कोछीक ॥३५॥ जो लन सातंरीधवण बुझ आडवकु
ठलतण साहम्भा वाची सुमन तेण गुण वीका नची ॥३६॥
जाण सतु यस्त्र आभ्य सर ॥ ते थ संभाव छे आनी सवर
आनोह सेवीकी अरु वार के स्पैन के सर कुचुवे ॥३७॥

Alavado Sahadevan Mandir, Dhule and the Yashoda Ghat, Varanasi
Digitized by srujanika@gmail.com

३

सज्जाकात्पाभासोदधारा सेवीता सुखजाक्षमरा ॥
 हृस्यैकनकीकेव्याधारा मध्यमध्यारा वाचीये ॥८॥
 सहुनीयासाहीकमल ॥ कीड़कादी शोड़शादक्षे ॥ तेगव
 छेनक्षुपानीक्षे ॥ सहस्रवच्छीमीनक्षुच्छे ॥ ९॥ तैयसेत
 नीपरगथवक्षे उन्मत्तमानवे आव्योउक्षे करीनीभान
 दोचागोधक्षे सुखकर्यक्षे ल्वानदे ॥ १०॥ व्यागध्याप
 उत्तीताच्याक्षनी ॥ ११॥ गत्तादत्तलक्षणी ॥ सानी
 नाशतेप्रासुनी ॥ नारोक्षपंणीनीवान् ॥ नयमोक्षसुख्य
 चाघड़े ॥ ताले तादीसतनीभानीगोड़तेनजीवाने पुरले ।
 भानीकोड़े अरीनीछुमाड़सोहंहंसे ॥ १२॥ मुमुक्षुक्षुकार
 आनीधीनीपीलीपत्तरनीनाचनीयेतनावसतवना ॥

ये नीजीनीजीन नीजरूपेण १६॥ सासद्गुरवंसत
रावो नीजभक्तवन्नदे उछाहो ॥ तोभागवत भजनआ
ध्याहो ॥ उधवो देवसागुरु १७॥ बारावेष्याध्याईनी
रोपण ॥ सर्तंगच महीमागदन कर्मचाकर्तविथ
कोण ॥ सागीतेलसाग ॥ १८॥ सपतीआकर्तवा ॥ १९॥
आध्यावो ॥ गुह्यसरु ॥ गदेवो तेपतीसावधाउध
वो ॥ याहुचीपाहुहो श्रीवहन १९॥ कायेसागद्गेहु
द्यगोष्टी ॥ कोणव्यक्तरतीघतीचोटी ॥ सावचनार्थधि
कावयामीनी ॥ उक्तासपोटीउधवा २०॥ जेसमेघमु

(30)

१६॥

॥ १९॥

Rajavati Sen, Sodhan Mandal, Dhule and the
Joint Project of the
University of Mumbai

रविन्द्रकावरी-व्यावरी-स्थकी चातको वीद्वच्छावद
देख॥ पसरीलेमुखा उधवे॥१७॥ नान सुध्याध्यानभा
जन कवडीया येक केले जाणौ साज येशा ता शान अ
वधा सावथान उधवा॥ साउधवा चाप्तदरु देखो
तोहरी जोका सादरु॥ कला पाहू अनी उदार स्त्री जगु
द्य सातु स्मागतु॥१८॥

नराधमा योगा न सो अभरेवच न साध्या धरत
पस्थागो न इष्टा पर्वन दस्तगा॥॥ आव्रता नी धरतु
द्याति नीर्थं नीर्थमा येभा येभा वृष्टे सहंग स
न सगा पहासा॥॥ ठोका॥ मजै वैस्य करावयाला

(6)

ति॥ सांमर्थनां द्वियाष्टां गयोगि॥ निसा नियेवीवेकज
गि॥ भांगोंवांगिमंजनपवे॥ २४॥ प्रस्तुतियुरुषविवंचना
ब्रह्मद्वालालाठितां मना॥ पावावयामाद्विस्तुना॥ सामर्थ्य
जाणास्यानां द्विः॥ २५॥ धर्मवाहिनी दीसकृत॥ सप्तस्याने
निभिनकुप्राप्त॥ मुख्यवरश्याने मीध्याप्राप्त॥ सांगसम
स्थाजकीपठिले॥ २६॥ कार्यसिवापुढिपंचाशीभा
आसानपनवडी॥ त्रुट्य घेणैल्लालावेडी॥ सूचेज
डीमीनजोडी॥ २७॥ हहेहसा गुनीउदास॥ वीरजा हामी
हुविसर्वश्च॥ साधनी आनी श्रेष्ठसन्यास॥ सासी मीधा
पशा लानुडी॥ २८॥ करिता श्रोत्रस्मार्तकमार्द्दी कर्मटजाकी
पाणि भीसी तहीमीनकद्वृष्टा ती कुतो होमासी कर्षणा॥ २९



(5)

गोदानशुदाननीहृदान। हानदेतां धनधान्ये शासीभी
 नाटोपजाण। दाताभीभान ब्रवचत्रा॥३०॥ उपांगललिता
 रुघीपंचमि॥ लुस्युपंचक बुधादमि। व्येनगंवेतेकरोतानेमि॥
 मित्रकमिनत्तुङे॥३१॥ यश्चमध्यराजस्याग॥ सर्वश्ववृचुनि
 करितांसांग॥ माझप्राप्तिसित्तिनक तच्छग। त्तेषांमिश्रिताना
 याचे॥३२॥ लुकिंवापिक व्यराम। दक्षरापणवनवीआम
 अन्यरत्नांस्मार्तिकर्म मिळ। तुमनमट॥३३॥ नानाद्विर
 हस्यमंत्र॥ विघ्निवधानेव्यतिविचित्र॥ सामर्थ्यवाविपवि
 त्र। तकतिस्यतत्र॥३४॥ लुकराहिनाथादिथ।

॥४॥

॥५॥

सिंधुपावावयाप्रोते ॥ सामर्थ्येसावेद्येसमा ॥ ३५ ॥ येमनेम
विशुद्धिनिति ॥ जेसारा शीजाविस्ताधकं सि ॥ वेयावयामा । -
३६ ॥ स्याद्वारपासि ॥ सामर्थ्येसिव्यासना ॥ ३६ ॥ उद्धवायम्
निधरि ॥ येकुण्ठसावय छार्त्तसविसारा ॥ दुजमिसांग ॥ ३७ ॥ वथंयेमनम
नसावार ॥ साक्षिपाकार ॥ वार ॥ ३७ ॥ वथंयेमनम
वारवारा ॥ आटि सक ॥ साक्षिनं सांसारा ॥ यावयामा
उपानगरा ॥ माग्निपुढारा चोलना ॥ ३८ ॥ तेगेलियंसाधु
च्याचरा ॥ घरनिसाधुच्यावाधरा ॥ व्यावधीबालिभा .

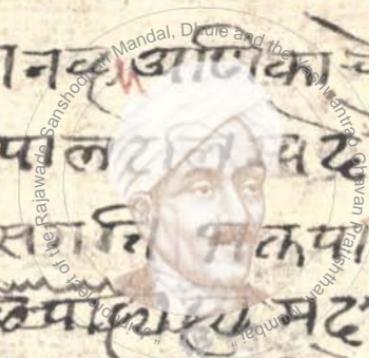


इथावरा ॥ येवं परं पराम लाप्ति ॥ ३९ ॥ तैसिनक
मुसुगति ॥ सोगे सकल संगात दृष्टि ॥ ठोक ठोक मा
झी प्राप्ती ॥ पंगि स्तान कु अणि काच ॥ ४० ॥ किट किष्ठ
मरि च्यो संगति ॥ पाल ॥ तदेक स्थीति ॥ तेविध
रुलियां सांवां दीसांडि ॥ कपाल र तेभ्यै छाँच्या
उद्धवा ॥ न्याय उपासना ॥ मटप ॥ ४१ ॥ कवळ पाणि
पाजड मुठ ॥ चदना सप्तावति ज़ाड ॥ तैसुगध जो
लिला कठें ॥ मोलगाटपा वलि ॥ ४२ ॥ तेब्येतने का

(6)

॥३९॥

॥४१॥



४३। वृत्तवर्धा ॥ चढ़लि देव ब्रह्मणा च्यानादा ॥ पाथापां
गुपेड़ियामता ॥ होजत वृत्तावं दिति ॥ ४३ ॥ वैसेविधर
लिया ससुगति ॥ महकमार्पदपावति ॥ सखीमजडि
पुज्यादाति ॥ सागोकिम् ॥ ४४ ॥ ससुंगतिवेगद्वजा
ना ॥ तकाल पावावप्पमा ॥ गन्ना वाणि कानोमिंगा
साधिनससज्जाण उभे ॥ ५ ॥ भागबालि निजसाध
नें तमिंववधीहि मछिन अंसि मार्वे ॥ पैकसुचिह्न
श्वाण ॥ तुलकारण सांगन ॥ ४५ ॥ वष्टांग योगदुलयो

८

॥५।

पवन ॥ सर्वथा साधेन जाण ॥ साधल्या वरि नागय
 ग ॥ व्यानी वार जाण सिंघित्ति ॥ ४७ ॥ नियानो ये वि
 वक ज्ञान ॥ चथेबा ॥ घ ॥ दिव्यानिमान ॥ प्रबल्लवो छी
 धनमान ॥ ज्ञान ॥ ८ ॥ १३ सिंह ॥ ४८ ॥ व्यानी सा
 धर्म करि गो उनी धम ॥ तागाव्यतिपाट ॥ गा
 लिता निमाल्या द्विव ॥ ताप ॥ व्याधीपदि ॥ ताधीम ॥ ४९
 करि तो यद्यायेन ॥ मुख्या वद्य गोलं मोन्ये ॥ ८० ॥
 मात्रं भीना तुडे जाण ॥ यजनदानं वांछीति ॥ ५१ ॥

॥६।

।



"Portrait of Shri Sant Sheshwanand Ji Maharaj, a spiritual leader of the Arya Samaj."

तपकरुजानोदहिं॥ क्राधतापसांचाहाईसरतोमंजा
वानणेकांहि॥ वाढतां पाहि नियेनवा॥ ५७ सर्वश्चया
गं संन्यासग्रहण॥ तथेहिनजहुदेशमिमान॥ व्यर्थ
वीरजालामोलाजाए॥ मीनक्षिमोनबाधिति ५८॥
ओतस्मार्तकर्मसांग॥ द्वयुतिज्ञकायाग॥ तथेआडवा
ठाकिखर्गभोग॥ कर्मक्षयराग साधकां ५९॥ नानाह
नहेत्तांसक्छ॥ वासनावांछिदानफळ कादातेपणेंग
वंप्रवळ॥ लागलाखाठ्लठ्लना॥ ५४ अनंतवरेवति

(2A)

(६)

॥१९॥

जाला॥ वोदगठिदेवोवांधलां॥ स्त्रियबनंतांतवि
सरला॥ देवोहुरविष्णुतिचा॥ ४८॥ नानायज्ञकरितां
विधि॥ मंत्रतंत्रपात्रस्यधि॥ सरुसापावानसकसिधि॥
पावल्यांवाधिफलंमार्ग॥ ५१॥ नानाढंडेरुस्यमंत्रुं॥
विकल्पानयेत्यरुं॥ मंत्रेमंत्रवल्पसाचारु॥ चल
लेवपारुमंत्रवाहि॥ ५२॥ भगविकरुद्दितांवंडि॥ ति ॥५॥
थीक्षिमानकापडि॥ भीकलाविलिंबापुडि॥ नाहिंव्य
धीघडि विश्राति॥ ५३॥ येमनेमवरबारा॥ करितांभा ।

खंडवोरबारा ॥ यों विसां माजीयाचाउभारा नंगति
स्त्रायरा: पंचविसावा ॥ ८९ ॥ येदं सांगितल्यां साधना
वपमतिकरितां यासि ग्राषकतावोहयैसि तेम्यातु
जपासि सांगितलि ॥ करितां साधने अपमतिसि
तथे विद्युं उपजतियैसी त्रिप्रिसाधने साद्यु उपदेशी स
र्वसिधि सिपावति ॥ राधन संगति निधरि ना
नास्त्राधनी हाकाये करि काण विधान संगति के सी
परि निजनिधरि कवना ॥ ९० ॥ न करि तां साधन यिपु

(8)

७। कवचज्ञापाससुगतिमजपावलेनेहोकि तमि
नुजप्रतिसांगेन॥८॥ श्लोक संस्कृतिनिधिरेत्यः
पादधानोर्खगमुगा॥ महान्नदिवासानागा॥ सीधिकार
णगुहका॥३॥ विधाए उव्याप्त्या देव्यसुश्राव्यि
यामुजा॥ रजस्तमप्रत्याहारतस्मृतस्मिन्द्युगमेषो॥४॥
५॥ टका॥ पाद्मादाकेवल उडुमुटुरजतमेयोनिजन्मले
मुठ॥ ससुगतिलागुनिदृढ़॥ मादोम्भृष्टद्यपावले दृढ़॥
दैत्यदानवनिशाचर॥ र्खगमगांधवीव्यसर॥ सिध्या।

७

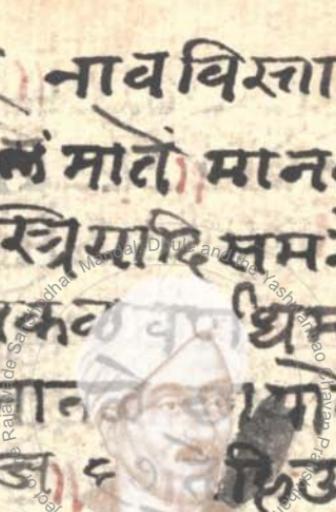
५॥

१५॥

The Bhavade Seishodhan Mandai, Dhule and the Aspwanitara
Chandramukhi Mumbaik Joint Project
of the Bhavade Seishodhan Mandai, "Joint Project
of the Bhavade Seishodhan Mandai, Dhule and the Aspwanitara
Chandramukhi Mumbaik"

रणविष्टधाधर नावविस्तारगुहक ॥ ८८ ॥
गमग सर्प पावलं मातो मानवन्नरि सहजे सर
तो वै व्येषु द्वा स्त्रियादि समस्ते पावलिभाटां स
सगं ॥ ८९ ॥ जे सकवे वर थमविगच्छे उया-च्चा
नेवासि कोष्ठी गत शोदरेखानिजगपौछ
ब्यसेतमेक्षेब्यसंज्ञ ॥ १० ॥ तिरुधारिलससंगति
आलमा इयापदप्रापि देवद्वा जसातें वंटिति
बस्तिनवकि तिसंताच्चि ॥ ११ ॥ धरिलया ससंगति
निधत्तवधकृति उधवानुंनी पापनोश्चीति

१५/१
११



॥८॥

तकीसहंगतिकरावि ॥८॥ सोनेसाडेपंध्रेवोख
डें॥ यासिरतचिसंगतिज्ञाडे॥ तेबाधिकाबधीक
मालवाढ़ मुगुणिंबदेमहूङ्गा ॥७०॥ तेसिपुष्पेपुरु
षांसहंगति जाल्याभनेत तुख्यपावति॥ सुरवर
सातांवेहिति दवयविपर्वति ॥७१॥ येमधमपायाला
गदि तिथेपायेवाणिम् ॥॥ सावधरिलियांसंसं
गति॥ येकुडिप्राप्तिपुरुङ्गासि ॥७२॥ हेसराष्ट्रेस
ख्यैश्चुद्रपीडि॥ व्यमेततरलेमृणसिकाई॥ सायाग
न्याठाई॥ बहुसालकाहितुधरले ॥७३॥ श्लोक-

॥९॥

१०८
वह महं प्राप्त स्त्रीं वाका यादि वादयो। वर्णनवा
बाजि बीजो मयम्भार्थ विभवेण॥५॥ सुग्रीवाहा
नुभानक्षोगजोगद्या रुदि क्षयथा॥ व्याघ्रं कुञ्जा
व्रजमाल्याय इत्यप्तस्तथाद्या टिको॥६॥

वत्रासुरा ईजवहि। वाई द्रासि मिसललायु
धि॥ युद्धीकिः व्यावर घरुधि माझानिजपौ इपा
वल ७४ ये कतानारदा च्यागाई गसि विभज
सिचात्तालमिठि ज्ञाजनमलाकय धुनापोटि भ
कंजगजे टिप्रलद्दु ७५ वसपविदै सवद्दु मा

Digitized by Ramavva Sansodhan Mandir, Dhule and the Yashoda Patel
Digitized by Ramavva Sansodhan Mandir, Dhule and the Yashoda Patel
Digitized by Ramavva Sansodhan Mandir, Dhule and the Yashoda Patel

(11)

114011

स्यापीजाल्यांप्रविषु बळि चाद्वारिमिखुजदु
जालोंबविषुभिकौसि ७६ छेलकरितांआचि
बंधन छलमविष्टलाउताचा व्यगा बाल
दारपाच्छा बळिल थी नामजाला ७७ सा
बळिसापुत्रबाजासु तत्ववारमात्तलोधार
माझ्यापुत्रबाचा गुत्र दालियोदरुनार
दु ७८ नाम्यासाधुनंधरीलचारु बाणुवा
णिकलाजर्जस्त्रिलासहंश्रमजोयामार

114011



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com